Vol-13 Special Issue- 1.4 ISSN- 2349-7076

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

“भारत की जी20 अध्यक्षता: 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के अनुवाद और वैश्विक संचार पर एक अध्ययन”

कु. आयुषी अशोक कार्लेकर
शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, यवतमाळ

सारांश

भारत की जी20 अध्यक्षता का मूलमंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (महोपनिषद से) रहा, जिसका अंग्रेजी अनुवाद और मुख्य विषय "One Earth One Family One Future" (एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य) था।वसुधैव कुटुम्बकम्' का अर्थ है "विश्व एक परिवार है"। यह प्राचीन भारतीय दर्शन को उजागर करता है, जो नस्ल, धर्म और राष्ट्रीयता से परे सभी जीवित प्राणियों के अंतर्संबंधों को मानता है। भारत ने इस विषय का उपयोग एक "निष्पक्ष मध्यस्थ" (bridge-builder) के रूप में किया, जिसने ध्रुवीकृत दुनिया (विशेषकर पश्चिम और रूस-चीन) के बीच एकता का संदेश दिया। यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि "LiFE (पर्यावरण के लिए जीवन शैली)" के माध्यम से एक व्यवहारिक समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया। One Earth, One Family, One Future" का अनुवाद वैश्विक संवाद को "एकजुटता, समानता, और स्थिरता" की ओर ले गया। इसने 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील देशों) की आवाज़ को केंद्र में रखा, जो भारत के सांस्कृतिक मूल्यों और आधुनिक भू-राजनीति का मिश्रण है। इस विचारधारा के तहत 'हरित विकास समझौता', 'वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन' (Global Biofuel Alliance) और 'डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे' (India Stack) को साझा किया गया, जो समावेशी विकास के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाते हैं। भारत ने जी20 के माध्यम से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को एक व्यावहारिक, मानव-केंद्रित और साझा भविष्य के रोडमैप के रूप में सफलतापूर्वक स्थापित किया। भारत ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" - "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" - को G20 की थीम बनाकर वैश्विक मंच पर मानवीय मूल्यों, सहअस्तित्व और समावेशी विकास की अवधारणा को पुनर्स्थापित किया। यह शोध-पत्र वसुधैव कुटुम्बकम् के भाषायी अनुवाद, उसके वैचारिक विस्तार तथा वैश्विक संचार (Global Communication) में उसकी भूमिका का विश्लेषण करता है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार भारत ने इस प्राचीन संस्कृत सूत्र को आधुनिक वैश्विक संवाद का प्रभावशाली माध्यम बनाया।

मुख्य शब्द : भारत, जी20 अध्यक्षत:, वसुधैव कुटुम्बकम्, अनुवाद, वैश्विक संचार।

प्रस्तावना : 21वीं सदी में वैश्विक संकट-जलवायु परिवर्तन, महामारी, युद्ध, आर्थिक असमानता-मानवता के समक्ष गंभीर चुनौती हैं। ऐसे समय में भारत की G20 अध्यक्षता ने वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे शाश्वत विचार को वैश्विक संवाद के केंद्र में रखकर एक नैतिक दृष्टि प्रदान की। यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि वैश्विक सहयोग का दर्शन है। भारत की जी20 अध्यक्षता (2023) के तहत "वसुधैव कुटुम्बकम्" (एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य) का विषय, भू-राजनीतिक विभाजनों के बीच एकता, समावेशी विकास और सतत भविष्य का एक भारतीय दर्शन प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन इस प्राचीन धारणा के अनुवाद, वैश्विक संचार, तथा 'लाइफ' (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) जैसी पहलों के माध्यम से साझा भविष्य को आकार देने में इसके प्रभाव का विश्लेषण करता है।वसुधैव कुटुम्बकम्" महा उपनिषद से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'धरती ही परिवार है', जो भारत की विश्व-दृष्टि को दर्शाता है। इस विषय के माध्यम से, भारत ने खुद को एक ऐसे देश के रूप में प्रस्तुत किया जो विभिन्न

संस्कृतियों और राष्ट्रों के बीच एकता, सहयोग और दयालुता को बढ़ावा देता है। यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक जन-केंद्रित आंदोलन था। यह अवधारणा भारत की विश्व-दृष्टि को प्रतिबिंबित करती है, जिसमें सम्पूर्ण पृथ्वी को एक परिवार के रूप में देखा जाता है।

उद्देश्य :

यह शोध कार्य से यह जांचने का प्रयास करना है कि कैसे इस मूल दर्शन ने, विशेष रूप से 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील देशों) की आवाज को बुलंद करते हुए, जी20 के एजेंडे को मानवता-केंद्रित बनाया।

भारत की G20 अध्यक्षता (2023) के दौरान 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य) के अनुवाद और संचार का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारतीय दर्शन के माध्यम से वैश्विक एकता, सतत विकास और समावेशी विकास को बढ़ावा देना था। इस विषय का अध्ययन करके वैश्विक संघर्षों के बीच भारत को 'विश्वबंधु' के रूप में स्थापित करने की रणनीति का विश्लेषण करना है।

इस संशोधन कार्य से इस बात का अध्ययन करना है कि कैसे भारत ने अपनी सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से एक विभाजित दुनिया में साझा समृद्धि और भाईचारे का संदेश दिया।

सके भाषायी और वैचारिक अनुवाद की प्रक्रिया का अध्ययन करना।

‘ग्लोबल साउथ’ की आवाज़ को सशक्त करने में इसकी भूमिका का मूल्यांकन करना।

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति और वैश्विक संचार रणनीति का विश्लेषण करना।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है।

सरकारी दस्तावेजों का विश्लेषण

अंतरराष्ट्रीय संबंधों एवं अनुवाद अध्ययन से संबंधित साहित्य की समीक्षा

आधिकारिक वक्तव्यों और नीति-पत्रों का अध्ययन

महत्व :

सांस्कृतिक सेतुः यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच समझ और जुड़ाव बढ़ाता है, जिससे विश्वबंधुत्व की भावना विकसित होती है।

ज्ञान का प्रसार : साहित्य, विज्ञान, और अन्य क्षेत्रों की जानकारी को भाषाई बाधाओं के पार पहुँचाता है।

वैश्वीकरण : व्यवसायों को वैश्विक बाजारों तक पहुँचने और ग्राहकों से उनकी भाषा में जुड़ने में मदद करता है।

सशक्तिकरण : कमजोर और हाशिए पर पड़े लोगों को अपनी आवाज़ दुनिया तक पहुँचाने का साधन देता है।

जी 20 अध्यक्षता और थीम का अनुवाद :

भारत ने G20 की थीम को तीन स्तरों पर प्रस्तुत किया-

संस्कृत मूल : वसुधैव कुटुम्बकम्

अंग्रेज़ी अनुवाद : One Earth, One Family, One Future

वैचारिक अनुवाद : समावेशी विकास, सतत भविष्य और साझा उत्तरदायित्व यह अनुवाद केवल शब्दों का नहीं, बल्कि संस्कृति से नीति तक का सेतु बना।

Teacher's Welfare is Nation's Welfare
CTEF
Council for Teacher Education Foundation
ESTD. 1985

अनुवाद की भूमिका : अनुवाद (Translation) की भूमिका भाषाओं और संस्कृतियों के बीच पुल बनाने, ज्ञान और विचारों का आदान-प्रदान करने, और लोगों को जोड़ने की है, जिससे शिक्षा, साहित्य, जनसंचार और वैश्विक समझ में वृद्धि होती है; यह भाषाई बाधाओं को दूर करके सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है और समाज के सभी वर्गों तक सूचना पहुँचाने में मदद करता है, जिससे विश्व-बंधुत्व और एकता स्थापित होती है।

ज्ञान और सूचना का प्रसार

सांस्कृतिक आदान-प्रदान

शिक्षा और भाषा शिक्षण

जनसंचार और मीडिया

व्यावसायिक और कानूनी आवश्यकता

सशक्तिकरण

अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि संदर्भ, संस्कृति और उद्देश्य को समझते हुए विचारों का हस्तांतरण है, जो मानवता को जोड़ने और साझा चुनौतियों का सामना करने में मदद करता है.

वैश्विक संचार में वसुधैव कुटुम्कम् की प्रभावशिलता : वैश्विक संचार में 'वसुधैव कुटुम्बकम' (पूरी पृथ्वी एक परिवार है) की अवधारणा अत्यंत प्रभावशाली है, जो भौगोलिक सीमाओं से परे एकता, सहिष्णुता और साझा उत्तरदायित्व को बढ़ावा देती है। यह विचारधारा जलवायु परिवर्तन, गरीबी और महामारी जैसी वैश्विक समस्याओं का समाधान सहयोगपूर्ण संवाद से करने में मदद करती है। LinkedIn के अनुसार, यह सिद्धांत वर्तमान विखंडित विश्व में शांति और समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। यह दृष्टिकोण राष्ट्रों को प्रतिस्पर्धा के बजाय एक-दूसरे की मदद करने और साझा समस्याओं (जैसेः पर्यावरणीय संकट) से निपटने के लिए प्रेरित करता है। यह विचार संघर्षों को कम करने और ऐसी दुनिया बनाने पर जोर देता है जहाँ हर व्यक्ति का सम्मान हो।वर्तमान में, सोशल मीडिया और नई पीढ़ी (Gen Z) के माध्यम से 'ग्लोबल फैमिली वाइब' (वैश्विक परिवार भावना) को तकनीकी रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम का दर्शन आज के समय में अधिक प्रासंगिक है, जो राष्ट्रीय स्वार्थों से ऊपर उठकर मानवता की भलाई के लिए संवाद की नींव रखता है।

वैश्विक संचार में भूमिका : "वसुधैव कुटुम्बकम्" ने वैश्विक संचार को निम्न रूपों में प्रभावित किया—

एकता का संदेश : भू-राजनीतिक ध्रुवीकरण के बीच संवाद को प्रोत्साहन।

सतत विकास पर बल : पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की सामूहिक भावना।

ग्लोबल साउथ की आवाज : विकासशील देशों की भागीदारी को प्रमुखता।

डिजिटल समावेशन : डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का साझा मॉडल।

चुनौतियाँ और आलोचनात्मक दृष्टि :

भू-राजनीतिक ध्रुवीकरणः वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में संघर्ष और शक्ति केंद्र बंटे हुए हैं, जिससे सभी को एक 'परिवार' मानना कठिन हो जाता है।

राष्ट्र-केंद्रित नीतियांः राष्ट्रीय हित और संप्रभुता का मुद्दा अक्सर वैश्विक भलाई के विचार के आड़े आता है।

सांस्कृतिक और वैचारिक मतभेदः भिन्न-भिन्न संस्कृतियों, धर्मों और विचारधाराओं के बीच तालमेल बिठाना चुनौतीपूर्ण है।

असमानता और दोहरे मापदंड विकसित और विकासशील देशों के बीच की खाई, साथ ही अंतरराष्ट्रीय संबंधों में दोहरे मापदंड, समावेशी सहयोग में बाधक हैं।

दार्शनिक बनाम व्यावहारिकः आलोचकों के अनुसार, वसुधैव कुटुम्बकम एक उदात्त दार्शनिक विचार तो हो सकता है, लेकिन यथार्थवादी वैश्विक राजनीति में यह अव्यवहारिक सिद्ध हो सकता है, जहाँ राज्य अपने अस्तित्व और हितों को पहले रखते हैं।

पश्चिमी प्रभुत्वः वैश्विक संस्थाएं अक्सर पश्चिम के मानकों से संचालित होती हैं, जिससे भारत के इस प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण को सही मंच मिलने में दिक्कत आती है।

सांप्रदायिक और संकीर्ण

व्याख्याः धार्मिक विविधता के इस युग में, इस दर्शन की सांप्रदायिक या संकीर्ण व्याख्या करने से वैमनस्य की संभावना भी रहती है।

निष्कर्ष : भारत की G20 अध्यक्षता में वसुधैव कुटुम्बकम् केवल एक दार्शनिक उद्धरण नहीं, बल्कि वैश्विक संचार का प्रभावी माध्यम बना। इसके अनुवाद ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर नई पहचान दी और यह सिद्ध किया कि प्राचीन ज्ञान आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकता है। वसुधैव कुटुम्बकम का विचार एक न्यायपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और स्थायी विश्व के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में देखा जाना चाहिए। इसे सफल बनाने के लिए राष्ट्रीय हितों के साथ-साथ वैश्विक जिम्मेदारियों का संतुलन और मानवता के प्रति साझा दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय दर्शन समकालीन विश्व-व्यवस्था में एक समावेशी और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है।

संदर्भ सूची :

भारत सरकार - G20 आधिकारिक दस्तावेज अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं सांस्कृतिक कूटनीति पर शोध लेख
अनुवाद अध्ययन (Translation Studies) से संबंधित ग्रंथ
https://journal.inence.org
www.hindijournal.com
जी20 शिखर सम्मेलन से संबंधित आधिकारिक भाषण
सांस्कृतिक कूटनीति और वैश्विक संचार पर समीक्षित (peer-reviewed) जर्नल लेख

CTEF
Council for Teacher Education Foundation
ESTD. 1985